बिहार सरकार

पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

(पशुपालन)

बाढ़ की स्थिति में पशु प्रबंधन

- बाढ़ आने की स्थिति में पशु को रखने की व्यवस्था ऊँचे स्थान पर करना चाहिए जहाँ जल निकास की उचित व्यवस्था हो ताकि पशु परिसर साफ एवं सूखा रहे तथा गर्मी एवं नमी जनित रोगों से पशुओं को बचाया जा सकें।
- पशुशाला को साफ एवं स्वच्छ रखने के लिये समय-समय पर विसंक्रामक का उपयोग करना चाहिए।
- पशु गृह को अत्यधिक नमी से बचाने के लिए पशुशाला में चूने का छिड़काव करना चाहिए।
- पशुओं को संतुलित आहार तथा साफ एवं ताजा पानी उपलब्ध कराना चाहिए।
- अतःपरजीवी एवं बाह्य परजीवी का प्रकोप इस समय काफी होता है। अतः इनसे बचाव हेतु सभी पशुओं में कृमिनाशक दवा का प्रयोग अवश्य करें।
- खुरहा-मुँहपका (एफ0एम0डी0) रोग, गलाघोंटू (हिमोरेजिक सेप्टीसिमिया), लंगड़ा बुखार (कृष्णजंघा), इन्टेरोटौक्सिमिया रोग के टीके यदि नहीं लगाए गये हों, तो अभी अवश्य लगवा दें।
- बीमार एवं घायल पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए एवं उपचार हेतु पशु चिकित्सक से सम्पर्क स्थापित करना चाहिए।
- आवारा एवं वन्य पशुओं से अपने पशु को सुरक्षित रखें।
- बाढ़ के समय मृत पशुओं से कई प्रकार की बीमारियाँ फैलने की संभावना अधिक होती है, अतः मृत पशुओं का निस्तारण सावधानीपूर्वक करें।

ठनका से पशुओं के बचाव हेतु सुझाव

- पशुओं को पशु शेड में रखना चाहिए।
- पशुओं को किसी एकल ऊँचे वृझ के नीचे न बाँधकर पेड़ों के समूह के नीचे बाँधना चाहिए।
- ऊँचें स्थान खासकर पहाड़ों पर पशु के खाने एवं पानी के लिये धातु निर्मित नाद का उपयोग नहीं करना चाहिए।
- उर्जा चालित यंत्रों से पशु को दूर रखना चाहिए।